International Journal of Education and Science Research Review
E- ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-6 December- 2014 P- ISSN2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

प्राथमिक शिक्षा शिक्षण अपेक्षाएं

अनुसंधान कर्त्ता–
कमल कुमार शर्मा
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय
झुंझुनूं, राजस्थान

शोध निर्देशक–
डॉ.श्यामसुन्दर कौशिक
पूर्व प्रभागाध्यक्ष
सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू(राज.)

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य में अच्छे बुरे को समझने का विवेक उत्पन्न करती है। शिक्षा कार्य कुशलता पूर्वक करने का साधन है। यह हमें सहिष्णुता तथा जगत को कुछ देने के लिए शक्ति प्रदान करती है। शिक्षा व्यैक्तिक व सामाजिक उत्तर दायित्वों का सफलता पूर्वक निस्पादन करने की योग्यता हमारे अन्दर उत्पन्न करती है। अच्छे व विपरित समय में अपने कर्तव्य पालन की जानकारी देती है।

वर्तमान समय में हम शिक्षा के उद्देश्य से बहुत दूर हैं। ऐपिम्टेटस के अनुसार राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है कि ऊंचे ऊंचे भवनों का निर्माण करने के स्थान पर नागरिकों के चरित्र को प्रोन्नत किया जाये। दास्ता के बन्धनों में बन्धे नागरिक ऊंची ऊंची इमारतों में रहें इसके स्थान पर उच्च आदर्शों से युक्त निर्धन नागरिक घास फूस से बनी झोंपड़ी में रहें तो अच्छा है।

वर्तमान में शिक्षकों द्वारा शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षा की तुलना में निर्देशन अधिक है, निर्देशन बालकों के बौद्धिक स्तर वृद्धि करने मे असफल है। यह प्रक्रिया बालकों के मस्तिष्क में सूचना, आंकड़े सूत्र भरने का अवश्य प्रयास करते हैं। इसके कारण बालक शिक्षा से विमुख होता है। निर्देशन के लिए यह आवश्यक है, परन्तु शिक्षा की प्राण वायु नहीं है। कक्षा शिक्षण अवलोकन के समय यह देखा गया कि शिक्षक शिक्षण के पश्चात बच्चे ने कहा मेरे कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा है। पुनः शिक्षक ने समस्या बच्चे के सम्मुख रखी उसे स्वंय समाधान के लिए कहा गया, बच्चे ने समस्या समाधान के प्रयास किये, कुछ शिक्षक की सहायता ली अन्त में बच्चे ने अपने साथी से बात की समझ नहीं पाया, स्वंय करते समय सब समझ में आ गया । यहां बच्चे की ये बातें स्पष्ट कर चुकी कि बालक की समस्या को ध्यान पूर्वक सुनें, उसकी अपेक्षित सहायता करें ऐसा करने से निश्चित रूप से शिक्षा समाज मे व्याप्त विसंगति दूर करने में सफल होगी।

वर्तमान समय में शिक्षक, शिक्षार्थी व अभिभावक सभी का अपना मूल कर्तव्य परिवर्तित हो गया है।शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिदिन नवीन प्रयोग हो रहे हैं ऐसे में शिक्षक को इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए कि बालक विद्यालय में मुस्कराते हुए आये तथा विद्यालय से घर जाते समय यह कहे कि हमें कुछ समय विद्यालय में और रूकना है। शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य मित्रवत सम्बन्ध हो, बालक को शिक्षक कक्षा कक्ष में स्वतन्त्र समस्या समाधानमूलक उत्साहवर्द्धक, तनाव मुक्त वातावरण प्रदान करे। उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार सीखने व स्वंय अपने ज्ञान निर्माण की स्थिति प्रदान करे ।

सैद्धान्तिक पक्ष

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में अधिकतम परिवर्तन का आधार गिजू भाई बधेका के विचार, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या शिक्षक के लिए 2010, निः शुल्क बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 है। यह सब कवायद् करने का मुख्य कारण प्राथमिक शिक्षा का विद्यालय में वतावरण हो, आप इससे स्पष्ट समझ सकते हैं। मेरे एक साथी श्री गणेश को विद्यालय में उसके पिताजी लेकर आ रहे थे, वो चिल्ला रहा था मुझे विद्यालय नहीं जाना है, मैं नहीं पढ़ना चाहता आदि कह रहा था। विद्यालय में आते ही गुरू जी ने ऊंची आवज में डांट लगाई गणेश कक्षा में बिना आवाज के जाकर बैठ गया, काफी समय तक सिसकियां भरता रहा। विद्यालय में मारपीट डांट डपट और भय का साम्राज्य है। यह सब प्राथमिक शिक्षा में बाधक है, इन्हीं से प्रभावित होकर शिक्षाविद् गिजू भाई बधेका ने अपने सक्रिय शिष्यों को आदेशित किया कि मेरे छात्रो मेरा आदेश है कि अस्त बल जैसी घूल भरी इन शालाओं को जमी दोज कर दो। मार पीट और भय दिलाने वाली इन बाल कत्ल खानों की नीवों को बारूद भर कर उड़ा दो। इन्हे नेस्तानबूत कर दो। इस प्रकार ये बालकों की स्वतन्त्रता को अत्यधिक महत्व दे रहे हैं। ये मानते हैं कि बालकों को स्वतन्त्रता देकर अच्छी तरह शिक्षित किया जा सकता है। इनका व्यक्तित्व स्वतन्त्र है। अपनी इच्छाओं, वृत्तियों, सही गलत के निर्णय को बच्चों पर लादने से भंयकर परिणाम सामने आते हैं। गिजू भाई ने भावनगर की ''दक्षिणामूर्ति'' संस्थान में प्राथमिक शिक्षा पर विभिन्न प्रयोग किये बच्चों से वार्तालाप, सरल मन को समझने के समय प्राप्त अनुभवों के आधार पर इन्द्रिय विकास, खेल निर्माण करने,शान्ति की क्रीड़ा, शैक्षिक भ्रमण, हाथ का कार्य,संगीत,नाटक, रचनात्मक कार्य, बाल संग्रहालय,कथा, कहानी द्वारा शिक्षण के विभिन्न प्रवृतियों का आयोजन किया। बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार, उनके सामर्थ्य क्षमता एवं प्रयोगशीलता में दृढ विश्वास से बच्चों के अवलोकन व आत्मावलोकन को आधार मिलता है। इस

सम्बन्ध में शिक्षाविद् उषा शर्मा (2005) ने कहा ''मैं नन्हे बालकों में बसने वाली आत्मा का दर्शन करती हूं। ये दर्शन मेरे भीतर एक प्रेरणा जगा रहा है कि बालको के अधिकारों की स्थापना करने के लिए मैं जीऊँ और यही कार्य करते करते मर मीटूं।''

शैक्षिक चिन्तन :–

मॉण्टेसरी पद्धति एक नवीन चिन्तन दिशा प्रदान करती है। इससे शिक्षण के नूतन आदर्शों का सुभारम्भ किया गया। शिक्षक की प्रतिष्ठा में प्रोन्नति, समाज निर्माण में भूमिका नये सिरे से निर्मित करता है। मनोविज्ञान को नवीन दृष्टि प्रदान करता है। व्यक्ति की शक्ति उसके चरित्र की सफलता का नवीन मूल्यांकन है। (दवे 2005) प्रारम्भिक शिक्षा में नवीनीकरण की परिकल्पना, गिजू भाई के दिव्य स्वप्न, जॉन हाल्ट की बच्चे असफल कैसे होते है। बचपन से पलायन के जीवन्त अनुभवों का निचोड़ है।

यह सर्वमान्य है कि मानसिक रूप से स्वस्थ बालक कार्य करने में सक्षम होता है, इससे संकल्पना की दृष्टि व विशाल व्यक्तित्व होता है। बालक मे जिज्ञासा, ज्ञानार्जन, समस्या समाधान एवं सृजनात्मक चिन्तन का बाहुल्य होता है। यदि यह प्रवृति निरन्तर व अबाध रूप से बालक में पोषित होती रहे तो निश्चित रूप से वह सफल होता है। यहां यह आवश्यक है कि बालक का विकास उपयुक्त वातावरण में होना चाहिए, तभी बालक का विकास एक निश्चित दिशा में परिवर्तित किया जा सकता है। यहां यह आवश्यक नहीं है कि उसके लिए सभी संसाधन आप उपलब्ध करवाएं उसके प्रत्येक कार्य की गुत्थी आप सुलझाएं, यह बालक को अच्छा नहीं लगता है। बालक अपना कार्य स्वयं करके देखना चाहता है। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप पसंद नही करता है, वह स्वतंत्र चिन्तन भयमुक्त वातावरण चाहता है, जहां पर अवलोकन, प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण, संश्लेषण प्रवृति के आधार पर प्रत्येक कार्य स्वयं करे। प्रसिद्ध विचारक जिब्रान ने कहा है कि ''आप उन्हें प्यार दे सकतें है, विचार नहीं क्योंकि विचार उनके पास अपने होते है। तुम उनका शरीर बन्द कर सकते हो लेकिन उनकी आत्मा नहीं क्योंकि आत्मा आने वाले कल में निवास करती है। उसे तुम नहीं देख सकते मैं भी नहीं देख सकता तुम उनकी तरह बनने का प्रयत्न कर सकते हो लेकिन उन्हे अपनी तरह बनाने की इच्छा मत करना क्योंकि जीवन पीछे की ओर नहीं जाता है, बीते हुए कल के साथ रूकता है।'' बालक की शिक्षा बालक को स्वावलंबी, निर्भय, सृजनशील या हूनरमंद एवं अभिव्यक्तशिल बनाने वाली होनी चाहिए। गिजू भाई के अनुभव का अध्ययन करने से स्पष्ट है, कि बालकों को विभिन्न विषय नहीं पढ़ाने चाहिए। यह निश्चित किया जाना सम्भव नहीं हो रहा है कि उनके लिए हानीकारक या लाभदायक क्या है। वे यह मानते थे कि बालक का नियमित अवलोकन किया जाये, इससे बालकों का शिक्षण प्रबन्धन स्वतः हो जायेगा। इस प्रकार गिजू भाई बधेका के विचारों का केन्द्र बालक है, बालक की स्वाभाविक वृत्तियों का सही विधि से विकास करना शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षण का आधार व्याख्यान नहीं वार्तालाप उपयुक्त है। बालकों के साथ खेल पद्धति द्वारा शिक्षण कराते हुए, गाने गाते हुए, वाद्ययन्त्रों के साथ नृत्य कराते हुए, कहानी लिखवाकर, अभिनय करके, बागवानी द्वारा ज्ञान स्थाई निर्मित करवा सकते हैं। इससे बालक का पूर्ण संवेगात्मक व भावात्मक विकास होता है। विभिन्न अनवेषण कार्यों में शिक्षण में वार्तालाप को उचित माना है। बेसिक स्मिल एजेन्सी के अनुसार वार्तालाप द्वारा बच्चों में कौशलों का विकास शीघ्र किया जा सकता है। यथा पढ़ना, लिखना, बोलना, गणना करना आदि ।

प्राथमिक शिक्षाकर्मी शैक्षिक प्रभाति में अधोलिखित विशेषताएं होनी चाहिए:–

1.बालकों के व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए ।
2.सृजनात्मक क्षमता के विकास को महत्व प्रदान करना चाहिए ।
3.शिक्षण में कृत्रिमता का स्थान नहीं होना चाहिए बल्कि वास्तविकता होनी चाहिए ।
4.शिक्षण में भय व दण्ड का स्थान नहीं होना चाहिए ।
5.शिक्षण में स्वतन्त्र वातावरण होना चाहिए ।
6. स्वास्थ्य शिक्षा को महत्व देवें ।
7.शिक्षण में समाजिकता, व्यवहारिकता को बल देना चाहिए।
8.शिक्षक की भूमिका मित्र, सहायक व राह प्रदर्शक की होना चाहिए ।(द हिन्दू 2005)

प्राथमिक शिक्षा –शिक्षण विधियां –

प्राथमिक शिक्षा के विकास पर अत्यधिक खर्च विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किये गये हैं परन्तु अपेक्षित परिणाम अप्राप्त है। इस असफलता का प्रमुख कारण कक्षा शिक्षण प्रक्रिया है। वर्तमान मे आधिकतर कक्षा शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षक छात्र अन्तःक्रिया एक दिशा वाली अर्थात् शिक्षण सूचना प्रदान व छात्र सूचना ग्रहिता है। इससे बौधिक ज्ञान प्राप्त होता है । परन्तु इसे व्यक्त करने व व्यवहार में प्रयोग करना बालक के लिए सम्भव नहीं हो पा रहा है।प्राथमिक शिक्षा के कक्षा शिक्षण का अधिकतम समय उक्त क्रिया में व्यतित होता है। यह बालक के लिए अव्यवहारिक तथा उदासीन बनाने का कार्य करते हैं। इससे बालक का ध्यान अधिगम में नहीं होता अतः अधिगम अस्थायी होता है। यहां यह आवश्यक है कि शिक्षकों को नवीन शिक्षण प्रक्रियाओं को कक्षा शिक्षण में अपनाने के लिए जागरूक करना है। जिससे बालक सक्रिय, रूचि पूर्ण मन से स्थाई व

व्यवहार में परिलक्षित ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बन जाये । यहां प्राथमिक शिक्षा के कक्षा शिक्षण प्रक्रिया को दोषमुक्त करने के लिए शिक्षण विधियां काम में ली जानी चाहिए ।

प्राथमिक शिक्षा के कक्षा शिक्षण को दोषमुक्त करने के लिए नाट्य प्रयोग पद्धति,स्वाध्याय शिक्षण पद्धति, श्रवण पद्धति, चलचित्र पद्धति, प्रत्यक्ष पद्धति, उन्मेष पद्धति सिद्धान्त मूलक, खेल पद्धति सिद्धान्त मूलक, प्रश्नोतर व जोड़ीवार पद्धति उपयोग करे । विषय की प्रकृति एंव कक्षा के स्तरानुरूप कक्षा शिक्षण पद्धति का चयन किया जाना आवश्यक है। प्रश्नोतर पद्धति प्राथमिक कक्षाओ में प्रारम्भिक कक्षा में उचित है। बच्चो में अनुभव प्रयोग व अवलोकन के आधार पर ज्ञान का मार्ग निर्मित होता है। भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल में नाटक प्रयोग का अच्छा उपयोग किया जा सकता है। नाटक एक ऐसा सुन्दर साधन है जो कि इतिहास को दृष्टि प्रदान करता है, विषय के प्रति रूचि व सरलता से अधिगम योग्य बनाता है। स्वंय शिक्षण पद्धति में बालक को परिस्थितियां देता है, जिससे बालक स्वंय प्रेरित होकर अपनी पसंद का चयन कर ज्ञान प्राप्ति के द्वारा अपनी शक्ति बढ़ाता है। श्रवण पद्धति द्वारा छोटे छोटे बालकों से मातृ भाषा का शिक्षण किया जाता है। शिक्षक बालको से पुनः पुनः कहानियाँ श्रवण कर बहुत सी बाते स्मरण करवाता है। अप्रत्यक्ष में बालकों में साहित्य सृजन क्षमता उत्पन्न करता है, बच्चों का प्रत्यक्ष अनुभव से सीखने की स्थिति प्रदत्त करने का शिक्षक को अच्छा माध्यम मिलता है, इसके द्वारा विभिन्न विषयों से रूचि पूर्ण बनाया जा सकता है । ज्ञान प्राप्त करने की स्वभाविक आदतें बालको में होती है, जैसे ज्ञात से अज्ञात, स्थूल से सूक्ष्म में जाना, आयु के अनुरूप इन्द्रिय विकास को ध्यान में रखकर शिक्षण किया जाता है तो यह प्रभावशाली शिक्षण होता है, उनमें से प्रथम स्थूल बातें स्पष्ट की जाती है। तत्पश्चात आस–पास की बातें स्पष्ट की जाती है। अन्त में सूक्ष्म बातें स्पष्ट करते है । इससे बालक सरलता पूर्वक तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करते है। इतिहास शिक्षण में इस विधि का प्रयोग कर सकते हैं । गणित व व्याकरण में भी प्रयोग किया जा सकता है। खेल विधि में शिक्षक–छात्र के मध्यखाई समाप्त हो जाती है। शिक्षक छात्र का प्रिय बन जाता है। इससे शिक्षण अधिक सहज हो जाता है, बालक अपनी रूचि क्षमता और यौग्यता के अनुसार ज्ञान प्राप्त करेंगे । ये बालक भविष्य के योग्य, बुद्धिमान, कर्तव्यपरायण व सृजनशील नागरीक बनेगें । वर्तमान शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास अपेक्षित है अतः बालकों को आगे भी कक्षा में दृष्टांतयुक्त पद्धति से शिक्षा दी जानी चाहिए। समाज में व्याप्त बुराई, विसंगतियां एंव आधुनिक शिक्षा प्रणाली की दुष्प्रवृतियों को दूर करने के लिए शिक्षा एक सक्षम माध्यम है। उक्त सभी आधारों पर शिक्षण अधिगम सिद्धान्तों की नीवं बनी। इसके आधार पर शिक्षण पद्धति में अधोलिखित स्थितियां सम्मलित की जायें। बालक के अनुभवात्मक व अभिव्यकतात्मक दोनों क्षमताओ का विकास होना चाहिए ।कक्षा शिक्षण में स्वभाविक वातावरण बनना चाहिए। बालक समस्या समाधान द्वारा सीखे शिक्षक उसका आवश्यकतानुसार सहयोग करें। बालक का शिक्षण प्रकिया में क्षमता व बौद्धिकता का विकास होना चाहिए, सृजनात्मकता में आस्था उत्पन्न होनी चाहिए। अनुभव के आधार पर बालक अपने ज्ञान का स्वंय सृजन करे ।उपरोक्त शिक्षण परिस्थिति से बच्चे के बाल सम्मान का विवेचन व विश्लेषण प्रभाव पूर्ण व सरल शैली में किया जा सकता है। इस आधार पर शिक्षक बालकों पर नूतन, नवीन प्रयोग करने के लिए शिक्षा आधार स्तम्भ पर प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं का उपचार किया जा सकता है। शिक्षा समस्याओं में नवीन विचारों का अनुप्रयोग वास्तव में प्राथमिक शिक्षा ही जीवन की प्रयोगशाला है।

प्राथमिक शिक्षा की निम्न समस्याएं है–

–बालकों पर आत्याधिक शैक्षिक बोझ
–जिज्ञासा का अभाव
–अमनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रम
–वातावरण में अतिकृत्रिमता
–बालमनोवृति का ध्यान न करना
–पाठक्रम शिक्षक व विषयवस्तु केन्द्रीत
–बालकों में सृजनात्मक गुण उत्पति में बाधक
–शिक्षकों में प्राथमिक शिक्षा शिक्षण के प्रति उदासीनता एवं संवेदन हीनता
–पाठ्य सहगामी क्रियाओं का समुचित अभाव
–शिक्षकों में अभिभावकत्व की कमी
–शिक्षण मातृभाषा में नहीं होता है।

शिक्षण प्रश्न करने के लिए नहीं है। बल्कि पूर्व निर्मित प्रश्न के नये उत्तर देना है।शिक्षा का उद्देश्य मात्र अधिकतम अंक प्राप्त करना नहीं है।प्राथमिक शिक्षा अध्ययन क्षेत्र का सम्बन्ध बालकेन्द्रित शिक्षा, बाल शिक्षण पद्धति, बाल मनोविज्ञान में है। अतः उपरोक्त शिक्षण समस्याओं के निराकरण हेतु यदि गिजू भाई, प्रो. कृष्ण कुमार, जॉन हाल्ट के अनुभवों को प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। उससे प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं व विसंगतियों को दूर किया जाना चाहिए। उससे प्राथमिक शिक्षा की समस्या विसंगतियों कों दूर किया जाना चाहिए। उक्त परिर्वतनों से प्राथमिक शिक्षा को वास्तविक अर्थो में प्रयोगशाला के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए

–आनन्ददायी शिक्षण और छात्रों को स्वफलन के अवसर प्रदान होगें।

–बालक की आन्तरिक क्षमताओं का विकास होना ।
–बालक में शिक्षण के प्रति अरूचि के स्थान पर जिज्ञासा, उत्थान, निडरता और मित्रता के गुण होगें।
–शिक्षक की एक तरफा भूमिका समाप्त व स्वंय मूल्याकंन व परीक्षण का अवसर प्राप्त होगा।
–बालको में तर्क,चिन्तन ,विश्लेषण,वर्गीकरण करने व सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा ।
–छात्रो में स्वंय अनुशासन, क्रियाशील, कल्पनाशील एंव प्रयोगशील शिक्षक की अहम भुमिका होना,नृत्य,गीत,संगीत व नाट्य प्रस्तुति करने कि क्षमता बढाना।

संदर्भ–

1. गौसालिया, दिव्या (2004) गिजू भाई का शैक्षिक दार्शन '' माता पिता से'' परिप्रेक्ष्य वर्ष 11 अंक– 2 अगस्त।
2. दवे दीनानाथ (2001) ''प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा पद्धतियां'' जयपुर गीताजंली प्रकाशन दवे दीनानाथ (2001) ''प्राथमिक विद्यालय की भाषा शिक्षा '' जयपुर गीताजंली प्रकाशन।
3. दवे दीनानाथ (2006) ''चलते फिरते शिक्षा'' जयपुर अंकित पब्लिकेशन।
4. देव रमेश (2004) ''मां बाप बनना कठिन '' दिल्ली स्ंस्कृति साहित्य विश्वास नगर (साहदरा)
5. धनकड़ मीरजा (2003) ''गिजूभाई बधेका दिव्या स्वप्न एक विश्लेषण ''भारतीय आधुनिक शिक्षा'' अक्टूबर। निर्मला गुप्ता(2007) ''प्राथमिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में गिजुभाई के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता'' परिप्रेक्ष्य वर्ष–14 अंक–3 दिसम्बर।
6. पाल यस (2005) ''दि हिन्दू'' फार ए चाइल्ड इन्सपायर्ड ऐज्यूकेशन सिस्टम 06, सितम्बर।
7. मोसेलक्र, आर. ए.(1999) ''ए फाईव प्वाइन्ट न्यूमिलेनियम युर्निवर्सिटि न्यूज वा.37 नं. ए.आर.यू.नई दिल्ली । वेस्ट,जॉन डब्लू, कोर्न ,जेम्स–वी (1332)रिसर्च इन ऐज्यूकेशन, नई दिल्ली प्रेक्टिस हाउस नई दिल्ली।
8. शर्मा उषा(2005) ''गिजुभाई का शिक्षा दर्शन'' परिप्रेक्ष्य वर्ष 12 अंक –2 अगस्त।
9. सूरज, प्रकाश (1332)'' दिव्यास्वप्न ''(शिक्षा सम्बन्धि प्रयोगों की कहानी) नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान।
10. सोनी राम नरेश (1999)''माण्टेसटी पद्धति ''आगरा वार्मदेवी प्रकाशन।